रुलाए बिना तो प्याज़ भी नहीं कटती ये तो ज़िन्दगी है जनाब ऐसे कैसे कट जाएगी

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

तुम उतने ही बच्चे पैदा करो जितनो को दूध पिला सको। शिवलिंग पर कितना दूध चढ़ाना है, ये हम तय कर लेंगे। हर हर महादेव 🙏

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ा : 16 अंक : 26 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 11 जुलाई से 17 जुलाई, 2024 पृठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

प्रधानमंत्री मोदी ने उन्नाव सड़क हादसे में लोगों की मौत पर दुख जताया, मुआवजे की घोषणा की

नई दिल्ली(संवाद सूत्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में एक सड़क हादसे में लोगों की मौत होने पर शोक जताया और कहा कि राज्य सरकार की देखरेख में स्थानीय प्रशासन पीड़ितों की हरसंभव मदद में जुटा है। उन्होंने मृतकों के परिजनों और घायलों के लिए मुआवजे की भी घोषणा की। उन्नाव के जोजीकोट गांव के पास आगरा–लखनऊ एक्सप्रेसवे पर एक डबल डेकर बस के दूध के टैंकर से टकराने से 18 लोगों की मौत हो गई और 19 लोग घायल हो गए। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) की ओर से सोशल मीडिया मंच एक्स पर जारी एक पोस्ट में मोदी ने कहा, ''उत्तर प्रदेश के उन्नाव में हुई सड़क दुर्घटना अत्यंत पीड़ादायक है। इसमें जिन लोगों ने अपनों को खोया है, उनके प्रति मेरी संवेदनाएं। ईश्वर उन्हें इस कठिन समय में संबल प्रदान करे।'' घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करते हुए उन्होंने कहा, ''राज्य सरकार की देखरेख में स्थानीय प्रशासन पीड़ितों की हरसंभव मदद में जुटा है।'' पीएमओ ने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पीएमएनआरएफ) से प्रत्येक मृतक के परिजनों को 2 लाख रुपये और घायल हुए प्रत्ध्येक व्यक्ति को 50,000 रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की।

उत्तर प्रदेश 20 जुलाई को पौधरोपण का नया रिकॉर्ड बनाएगा: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

लखनऊ (संवाददाता)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को कहा कि एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत उत्तर प्रदेश को इस वर्ष 36.46 करोड़ से अधिक पौधे लगाने का लक्ष्य मिला है और सभी विभाग आपसी समन्वय से इस लक्ष्य को हर हाल में आगामी 20 जुलाई को पूरा करें। राज्य सरकार के एक प्रवक्ता ने बताया कि आदित्यनाथ ने अपने सरकारी आवास पर पेड़ लगाओ–पेड़ बचाओ जन अभियान–2024 की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व व मार्गदर्शन में एक पेड़ मां के नाम अभियान को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया तथा इस अभियान के तहत उत्तर प्रदेश को इस वर्ष 36.46 करोड़ से अधिक पौधे लगाने का लक्ष्य मिला है। मुख्यमंत्री ने सभी संबंधित विभागों को निर्देश दिया कि आपसी समन्वय से इस लक्ष्य को हर हाल में आगामी 20 जुलाई को पूरा करें। उन्होंने कहा कि 19522 और 2022 में 19188 थी।

प्रदेशव्यापी पौधरोपण अभियान के लिए विभागवार व जनपदवार लक्ष्य निर्धारित करते हुए कार्य किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा, " उत्तर प्रदेश में पौधरोपण अभियान अब जनांदोलन का स्वरूप ले चुका है। विगत छह वर्ष में यहां 168 करोड़ से अधिक पौधे रोपित किए जा चुके हैं।" कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने सारस की ग्रीष्मकालीन गणना–2024 की घोषणा भी की। उन्होंने बताया कि इस बार गणना में 19918 सारस पाए गए हैं जबकि साल 2023 में यह संख्या

दिव्यांग जन अधिनियम लागू करने में सरकार नाकाम, सुप्रीम कोर्ट ने लगाई फटकार

नई दिल्ली(संवाद सूत्र)। सुप्रीम कोर्ट ने विकलांग व्यक्ति अधिनियम के प्रावधानों को लागू करने और बैकलॉग रिक्तियों को भरने में विफल रहने के लिए केंद्र को फटकार लगाते हुए 2009 में सिविल सेवा परीक्षा (सीएसई) पास करने वाले 100 प्रतिशत दृष्टिबाधित उम्मीदवार को तीन महीने के भीतर नियुक्त करने का आदेश दिया है। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति पंकज मिथल की पीठ ने कहा कि भारत संघ की ओर से घोर चूक हुई है। पीडब्ल्यूडी अधिनियम, 1995 के प्रावधानों को तुरंत लागू करने में। दुर्भाग्य से, इस मामले में अपीलकर्ता ने एक ऐसा रुख अपनाया है जो विकलांग व्यक्तियों के लाभ के लिए कानून बनाने के मूल उद्देश्य को विफल करता है। यदि अपीलकर्ता ने विकलांग व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों की सुरक्षा और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 को उसके वास्तविक अक्षरश और भावना में लागू किया होता, तो प्रतिवादी नंबर 1 (दृष्टिबाधित उम्मीदवार) को दर–दर भटकने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ता।

लिखित परीक्षा और साक्षात्कार लेने के बाद, श्रीवास्तव को नियुक्ति से वंचित कर दिया गया। इसके बाद उन्होंने केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण का रुख किया, जिसने 2010 में संघ लोक सेवा आयोग और कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग को छह महीने के भीतर पीडब्ल्यूडी अधिनियम, 1995 के आदेश का पालन करते हुए बैकलॉग रिक्तियों की गणना करने का निर्देश दिया। कैट ने भारत संघ को यह भी निर्देश दिया कि वह श्रीवास्तव को सूचित करें कि क्या उन्हें सेवा आवंटित की जा सकती है। उक्त आदेश के अनुसार, 9 सितंबर, 2011 को यूपीएससी ने उन्हें सूचित किया कि उनका नाम पीएच–2 (दृष्टिबाधित–VI) श्रेणी के लिए उपलब्ध रिक्तियों की संख्या के भीतर सीएसई–2008 की मेरिट सूची में शामिल नहीं है। श्रीवास्तव ने कैट के समक्ष एक और आवेदन दायर किया, जिसने यूपीएससी को 29 दिसंबर, 2005 के कार्यालय ज्ञापन के अनुसार अनारक्षित/सामान्य श्रेणी में अपनी योग्यता के आधार पर चयनित उम्मीदवारों को समायोजित करने का निर्देश दिया।

रोटरी क्लब ने सोलर ऊर्जा के प्रति आम लोगों को किया जागरुक

जयपुर। रोटरी क्लब जयपुर ने पर्ल अपार शक्ति इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के साथ समाज में सोलर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में कार्यक्रम किया। रायजोन सोलर कंपनी के डिस्ट्रीब्यूटर अंकुर माखीजा ने बताया कि सोलर ऊर्जा को लगाकर आमजन कैसे बिजली के बढते बिलों से निजात पा सकता है। अंकुर मखीजा ने ये भी बताया कि किसान खेती के साथ में सोलर सिस्टम का उपयोग करके बिजली उत्पादन में कैसे सहयोग दे सकते हैं। इस कार्यक्रम में क्लब के सदस्यों ने सहयोग किया। इस दौरान प्रेसिडेंट अनुराधा शर्मा और सेक्रेटरी वर्मा भी मौजूद रहीं।

वरिष्ठ समाज सेवक मंगला शुक्ल का जन्म दिवस समारोह संपन्न

मुंबई–भांडुप के वरिष्ठ समाज सेवक जय बजरंग एकता मानस मंडल के महा संचालक मंगला शुक्ल का जन्मदिन उनके निवास स्थान पर बड़े धूमधाम से मनाया गया। उपरोक्त अवसर पर युवा ब्रिगेड एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. सचिन सिंह, महासचिव राकेश मिश्र, मानस मंडल के संचालक सदाशिव चतुर्वेदी , संचालक डॉ श्री प्रकाश आर गिरी, व्यास चन्द्रमा प्रसाद मिश्र, संचालक बाबुलनाथदुबे, कोषाध्यक्ष राम आसरे तिवारी, सयोजक श्रीराम दुबे,नव निर्वाचित अध्यक्ष मंगला मिश्रा, सह व्यास गुलाबधर मिश्र, सांस्कृतिक अध्यक्ष अवधेश बी शुक्ल (रसिया), महिला अध्यक्षा एडवोकेट योगिता अनुपम दुबे, संयोजक अनुपम दुबे,सहित भांडुप के गणमान्य लोगों ने शाल पुष्प गुच्छ एवम भेंट वस्तु प्रदान कर, केक काट कर मंगला शुक्ल का जोरदार तरीके से अभिनंदन किया।

रोना

रोना भी रखता है जीवन मे एक अंग,
सभी रोते है रख अपना अपना ढंग,
रोना भी जिंदगी में एक मजबूरी है,
इसके बिना भी जिंदगी कुछ कुछ अधूरी है,

कोई दुःख मे तो कोई सुख में करता आँखें नम,
कोई – नही, रोता है कोई मिटाने को गम,
कोई रोता है किसी अपने के मर जाने के बाद,
आँखें भिगोता है कोई कृत गलत कर जाने के बाद,

ऐसा रोना कोई रोना नही

रोना वह जो सहज आँखें नम कर जाए,
मन को –कर हर भाव मे कीमत मर जाए,
याद उनको कर आँखों में आँसु आ जाय,
दर्द उठे मिटा चेहरे पर मुस्कान छा जाय,

–है जो धन्यवाद करने की आवाज न हो,
हाथ मे पूजा की थाली घंटी घड़ियाल न हो,
मन में उठा भाव आँखों तक आ जाय,
आँसु बने रोना विनोद तो रोना आ जाय।

विनोद ओबेरॉय

खराब सड़क ने ली 2 वर्षीय मासूम की जान

अमित शिवकुमार दुबे, कार्यकारी संपादक
ज्ञान सरोवर

पालघर। पालघर जिला के औद्योगिक शहर बोईसर में संजीवनी अस्पताल के सामने सुबह–सुबह एक दर्दनाक हादसा हुआ।जिसमें एक 2 वर्षीय बच्चे की मौत हो गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मधुर होटल से मुकुट फ़ैक्ट्री की ओर जाने वाली सड़क की बहुत ही बुरी दुर्दशा है।ठेकेदार द्वारा बहुत ही घटिया और स्तरहीन तरीके से इस सड़क का निर्माण किया गया।जिसके कारण यह सड़क एक साल भी ठीक से नहीं चल पाई और जगह–जगह पर खड्डे बन गए।बारिश का पानी जमा होने के कारण वहाँ लोगों को खड्डे होने का पता ही नहीं चलता और आए दिन कोई न कोई हादसा होता रहता है।

कल एक स्कूटी सवार व्यक्ति अपने 2 बच्चों सहित इस रास्ते से गुजर रहा था तभी अचानक स्कूटी खड्डे में घुस गई और 2 वर्षीय बच्चा स्कूटी से गिर गया और उसके सिर में गंभीर चोट लगी।मौके पर तैनात ट्रैफिक पुलिस के अधिकारियों ने उसे इलाज के लिए पास के अस्पताल

संजीवनी में एडमिट कराया जिसके बाद डॉक्टरों ने उसे सीरियस बता कर दूसरे जगह रेफर कर दिया जहाँ उसकी मौत हो गई।

लोगों का कहना है कि हमारे द्वारा एमआईडीसी ऑफिसर को बार–बार जानकारी देने के बाद भी इस रास्ते का कार्य नहीं किया गया और अंततोगत्वा यह 2 वर्षीय मासूम की जान चली गयी।बच्चे की दर्दनाक मौत के बाद अधिकारियों की नींद खुली और इसके बाद सड़क बनाने का कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस हादसे के बाद स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश फैला हुआ है।लोगों ने हादसे को लेकर ठेकेदार पर कठोर कार्रवाई के लिए धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया है।आने वाले समय में यह प्रदर्शन अपने अंतिम लक्ष्य को लेकर और तेज होने की ख़बर है।लोगों का एक ही प्रश्न है कि इस हादसे का ज़िम्मेदार आख़िर कौन है। क्या अब शहर में खराब सड़क बनाने वालों पर कोई कठोर कार्रवाई होगी या आम जनता को ऐसे ही ठेकेदारों के भरोसे मरने के लिए छोड़ दिया जाएगा।

134वीं मासिक काव्यगोष्ठी सम्पन्न

साहित्यिक, सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यों के लिए प्रसिद्ध राष्ट्रीय संस्था काव्यसृजन द्वारा दिनांक 7 जुलाई 2024 दिन रविवार को मासिक काव्यगोष्ठी का आयोजन एरो अकादमी, सफेदपुल,साकीनाका,मुंबई में किया गया। इस मासिक काव्यगोष्ठी की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यकार व समीक्षक हौसिला प्रसाद अन्वेषी जी ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में विख्यात कवि श्री शारदा प्रसाद दूबे शरदचन्द्र जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रा. अंजनी कुमार द्विवेदी ष्अनमोलष जी ने किया। सम्मानित अतिथियों ने माँ शारदे को माल्यापर्ण कर तथा दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम की शुरुआत की। एड. राजीव मिश्र जी ने अपने मधुर कंठ से माँ वीणापाणि की बहुत ही सुंदर वंदना करके कार्यक्रम की शुरुआत की।तत्पश्चात मुंबई ,ठाणे, पालघर, रायगढ़ जिले तथा दूर– दराज से आए हुए कवियों, कवयित्रियों ने काव्यपाठ किया। जिनमें सर्वश्री अवधेश यदुवंशी, लालबहादुर यादव कमल, माता प्रसाद शर्मा ,आनंद पाण्डेय केवल, डॉ. प्रमोद पल्लवित, कवयित्री लक्ष्मी यादव ,एड. राजीव मिश्र ,श्रीधर मिश्र ,सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री नरेंद्र शर्मा खामोश, शारदा प्रसाद दूबे , हीरालाल यादव हीरा, शताज मोहम्मद,कु. स्नेहा शर्मा जी, प्रो. अंजनी कुमार द्विवेदी अनमोल आदि प्रमुख रहे। सभी कवियों ने शानदार काव्यपाठ करके कार्यक्रम को खूब ऊँचाई प्रदान की। सभी की रचनाएँ और प्रस्तुति बहुत ही शानदार रही। अंजनी कुमार द्विवेदी अनमोल जी ने अपने शानदार संचालन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस बीच सभी कवियों ने बारिश के साथ चाय व वड़ा पाव के नाश्ते का भी खूब आनंद लिया।अंत में दिवंगत द्वय आत्माओं प्रख्यात गजलकार स्व. हस्तीमल हस्ती तथा संस्था के संस्थापक पं. जमदग्निपुरी के चाचा स्व. विजयनाथ पाण्डेय जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु दो मिनट का मौन रख कर सभी ने ईश्वर से प्रार्थना की अंत कार्यक्रम के समापन के क्रम में संस्था के कोषाध्यक्ष लालबहादुर यादव कमल जी ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी कवियों, श्रोताओं, स्नेहीजनों के प्रति कृतज्ञता सहित आभार ज्ञापित किया। गोष्ठी के लिए जगह उपलब्ध कराने के लिए एरो अकादमी की संचालिका रीमा यादव का संस्था की तरफ से विशेष आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम के आखिरी क्षणों में ग्रुप फ़ोटो तथा राष्ट्रगान के साथ इस शानदार स्नेहिल गोष्ठी का समापन हुआ।

भोजपुरी एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा भोजपुरी नग के पुण्यतिथि पर सराहनीय आयोजन....

भोजपुरी नग कहे जाने वाले भिखारी ठाकुर (लोक कलाकार नवजागरण के संदेशवाहक समाज सुधारक, भोजपुरी भाषा को समृद्ध करने वाले और लोक संगीत को व्यापक प्रचार–प्रसार करने वाले महान व्यक्तित्व) के पुण्यतिथि पर भोजपुरी एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया द्वारा आयोजित कार्यक्रम एक सराहनीय प्रयास रहा. बहुमुखी प्रतिभा के धनी भिखारी ठाकुर पर मुख्य रूप से प्रो अनिल राय (पूर्व विभाग अध्यक्ष –हिंदी विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर

विश्वविद्यालय) एवं प्रो दीपक त्यागी (वर्तमान अध्यक्ष) ने विस्तार से लोक कलाकार, नवजागरण के संदेशवाहक, समाज सुधारक, भोजपुरी भाषा को समृद्ध करने वाले और लोक संगीत को व्यापक प्रचार–प्रसार करने वाले महान व्यक्तित्व के स्वामी श्री भिखारी ठाकुर पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राकेश कुमार श्रीवास्तव, डॉ रूप कुमार बनर्जी व राकेश मोहन श्रीवास्तव एवं अन्य ने सभी का स्वागत किया . डॉ शिवेंद्र ने संचालन एवं कनक हरि अग्रवाल ने आभार व्यक्त किया.साहित्य एवं भोजपुरी संस्कृति से जुड़े उक्त आयोजन में हम सभी ने शिरकत की. सराहनीय प्रयास...

– संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार
सामाजिक विज्ञान, विज्ञान एवं खेलकूद एवं सदस्य
–भोजपुरी एसोसिएशन ऑफ इंडिया (BHAI) (गोरखपुर)...

विप्र फाऊण्डेशन, बोईसर की सामाजिक चिंतन बैठक सफलतापूर्वक संपन्न

अमित शिवकुमार दुबे, कार्यकारी संपादक
ज्ञान सरोवर

पालघर। विप्र फ़ाऊण्डेशन,बोईसर के द्वारा शुक्रवार को सामाजिक चिंतन बैठक बुलाई गई।बैठक का आयोजन आभा टेक्सटाईल्स के सभागार कक्ष में किया गया जिसमें विप्र जनों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।सुखद बात यह रही कि यहाँ उपस्थित सभी व्यक्तियों को बोलने का अवसर मिला और सभी ने अपनी बातों को बड़ी ही बेबाक़ी व सरलता के साथ रखा।लगभग हर उम्र के लोगों का जमावड़ा था और सभी ने अपना–अपना अनुभव एक–दूसरे के साथ साझा किया। समाज में विप्र जनों की समस्याओं के साथ ही उसके निराकरण,विप्रों के आपसी तालमेल,आर्थिक रूप से कमजोर विप्र कन्याओं के विवाह संबंधी समस्याओं व उसके निराकरण,समाज में विप्रों को लेकर तरह–तरह की फैलाई जा रही अफ़वाहों,लवजिहाद,समाज में हिंदुओं की स्थिति आदि अनेक मुद्दों पर खुलकर चर्चा हुई और समाज की एकजुटता के लिए प्रतिबद्धता जताई गई।

विप्र फ़ाऊण्डेशन प्रमुख श्री ब्रह्मदेव चौबे जी व श्री रविकान्त पाण्डेय जी के आह्वान पर बुलाई गई इस सामाजिक चिंतन बैठक में स्वामीनाथ पाण्डेय, एडवोकेट शोभनाथ त्रिपाठी, विवेक चौबे, राकेश पाण्डेय, अमरेन्द्र शुक्ला, रामभवन त्रिपाठी, रामप्रसाद पाण्डेय, दिग्विजय तिवारी, दिग्विजय मिश्रा, सोनू पाण्डेय, महादेव तिवारी, हरिप्रकाश तिवारी, अखिलेश पाण्डेय, प्रेम शंकर शुक्ला, राम शंकर तिवारी व महादेव तिवारी के साथ–साथ अन्य विप्रों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर बैठक को गति प्रदान कर दी। रविकान्त पाण्डेय जी द्वारा आभार व धन्यवाद ज्ञापन किया गया और अल्पाहार के साथ ही बैठक की समाप्ति की घोषणा कर दी गई।

आखिर वो दिन आ ही गया....

झुमकी आज बहुत खुश थी. उसके पास नई किताब, नया बस्ता और नवीन गणवेश जो थी. कल से उसे विद्यालय जाना है, ये सोचकर वह बहुत प्रसन्न व रोमांचित थी. अपने भैया को जब गणवेश मे बस्ता लेकर विद्यालय जाते देखती तो सोचती कि वो कब विद्यालय जायेगी? आखिर वो दिन आ ही गया....

झुमकी अपना नया बस्ता अपने सिरहाने रखकर जाने कब सो गई. अचानक कोलाहल मे कोई उसे गोद मे उठाकर भाग रहा था. उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था, बस बड़ी बड़ी आसमान की तरफ ऊँची उठती लपटे. ना उसके माता पिता दिखाई दे रहे थे और ना ही भैया. उसने देखा लोग आग बुझाने की पूरी कोशिश मे लगे हुए थे. अंत मे तीन लाशें निकाली गई.जो की झुमकी के माता पिता व भाई की थी.

झुमकी को पड़ोसी खाना दे दिया करते थे. पर उसका अपने परिवार के खो देने की वजह से खाना– पीना सब मुश्किल हो गया. एक दिन झुमकी अपने जले हुए घर मे अपना किताब व कॉपी से भरा बस्ता व गणवेश लेकर रो रही थी, क्योंकि सब बुरी तरह जल कर खाक हो चुके थे उसके सपनों की तरह.....

अब झुमकी अनाथालय मे पल रही थी. अभी भी उसके सपनों मे अक्सर दावानल का दृश्य जीवंत हो ही जाता. आखिर एक दिन एक रईस जोड़े ने झुमकी को दत्तक ले लिया. झुमकी का नया नाम था ज्योति.अब ज्योति एक बार फिर नये गणवेश, नई किताबों के साथ नये विद्यालय मे प्रवेश करने जा रही थी.

समय पंख लगाकर उड़ चला.....

अब ज्योति कलक्टर बन गई थी. उसकी नियुक्ति उसके पुराने गाँव मे हुई. दौरा करते समय उसकी नजर अपने दावानल मे स्वाहा हुए घर के अवशेष की तरफ गई. ज्योति ने तुरंत सरकार से अनुमति लेकर प्राथमिक पाठशाला का कार्य आरंभ कर दिया.अब केसरिया अग्नि के हवन कुंड वाला स्थल विद्या की ज्वाला बनकर ज्ञान का प्रकाश फैला रहा था....

—लक्ष्मी यादव

क्या भारत में वरिष्ठ नागरिक होना अपराध है?

माननीय सांसद श्रीमती जया बच्चन ने संसद में बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया, जिसके लिए हम उन्हें सलाम करते हैं, उनके भाषण को इस प्रकार से पुनः प्रस्तुत किया गया है;

"वरिष्ठ नागरिकों को मार डालो

सरकार को 65 वर्ष की आयु के बाद सभी वरिष्ठ नागरिकों को मार डालना चाहिए, क्योंकि सरकार इन राष्ट्र निर्माताओं पर ध्यान देने के लिए तैयार नहीं है।

क्या भारत में वरिष्ठ नागरिक होना अपराध है?

भारत के वरिष्ठ नागरिक 70 वर्ष की आयु के बाद चिकित्सा बीमा के लिए पात्र नहीं होते, उन्हें म्डप पर लोन नहीं मिलता। ड्राइविंग लाइसेंस जारी नहीं किया जाता। उन्हें कोई काम नहीं दिया जाता, इसलिए वे जीवनयापन के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं। उन्होंने रिटायरमेंट की आयु यानी 60–65 तक सभी कर, बीमा प्रीमियम का भुगतान किया था। अब वरिष्ठ नागरिक बनने के बाद भी उन्हें सभी करों का भुगतान करना होगा। भारत में वरिष्ठ नागरिकों के लिए कोई योजना नहीं है। रेलवे/हवाई यात्रा पर 50% छूट भी बंद कर दी गई है। तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि राजनीति में वरिष्ठ नागरिक विधायक, सांसद या मंत्री हैं, उन्हें हर संभव लाभ दिया जाता है और उन्हें पेंशन भी मिलती है। मैं यह समझने में विफल हूं कि अन्य सभी (कुछ सरकारी कर्मचारियों को छोड़कर) को समान सुविधाओं से वंचित क्यों किया जाता है। कल्पना कीजिए, अगर बच्चे उनकी परवाह नहीं करेंगे, तो वे कहां जाएंगे। अगर देश के बुजुर्ग चुनाव में सरकार के खिलाफ जाते हैं, तो इसका असर चुनाव परिणामों पर पड़ेगा। सरकार को इसके परिणाम भुगतने होंगे।

वरिष्ठ नागरिकों के पास सरकार बदलने की शक्ति है, उन्हें नज़रअंदाज़ न करें। उनके पास सरकार बदलने का जीवन भर का अनुभव है। उन्हें कमज़ोर न समझें! वरिष्ठ नागरिकों के लाभ के लिए बहुत सी योजनाओं की ज़रूरत है। सरकार कल्याणकारी योजनाओं पर बहुत पैसा खर्च करती है, लेकिन वरिष्ठ नागरिकों के बारे में कभी नहीं सोचती। इसके विपरीत, बैंकों की ब्याज दरों में कमी के कारण वरिष्ठ नागरिकों की आय कम हो रही है। अगर उनमें से कुछ को परिवार और खुद का भरण–पोषण करने के लिए मामूली पेंशन मिल रही है, तो उस पर भी आयकर देना पड़ता है। इसलिए वरिष्ठ नागरिकों को कुछ लाभों के लिए विचार किया जाना चाहिए:

(1) 60 वर्ष से ऊपर के सभी नागरिकों को पेंशन दी जानी चाहिए

(2) सभी को उनकी हैसियत के अनुसार पेंशन दी जानी चाहिए

(3) रेलवे, बस और हवाई यात्रा में रियायत।

(4) सभी के लिए अंतिम सांस तक बीमा अनिवार्य होना चाहिए और प्रीमियम का भुगतान सरकार द्वारा किया जाना चाहिए।

(5) वरिष्ठ नागरिकों के न्यायालयीन मामलों को जल्दी निर्णय के लिए प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

(6) सभी सुविधाओं के साथ हर शहर में वरिष्ठ नागरिकों के घर।

(7) सरकार को 10–15 साल पुरानी पुरानी कारों को स्क्रैप करने के नियम में संशोधन करना चाहिए।

यह नियम केवल व्यावसायिक वाहनों पर लागू होना चाहिए। हमारी कारें लोन पर खरीदी जाती हैं और हमने 10 साल में केवल 40 से 50000 किलोमीटर ही इस्तेमाल की हैं। हमारी कारें नई जैसी ही हैं। अगर हमारी कारें स्क्रैप की जाती हैं, तो हमें नई कारें दी जानी चाहिए। मैं सभी वरिष्ठ नागरिकों और युवाओं से अनुरोध करता हूं कि इसे सभी सोशल मीडिया पर शेयर करें। आइए आशा करते हैं कि यह सरकार, जो हमेशा ईमानदार रहती है और सबका साथ, सबका विकास की बात करती है, उन लोगों की बेहतरी के लिए कुछ करेगी जिन्होंने राष्ट्र निर्माण में योगदान दिया है और अब अपने यौवन से बाहर आ चुके हैं।

उत्तर प्रदेश के उन्नाव में, आगरा–लखनऊ एक्सप्रेसवे पर हुए दर्दनाक सड़क हादसे में कई लोगों की मृत्यु का समाचार बेहद दुखद है।

मैं सभी शोक संतप्त परिजनों को अपनी गहन संवेदनाएं व्यक्त करता हूं और घायलों की शीघ्र से शीघ्र स्वस्थ होने की आशा करता हूँ।

*सरकार से अनुरोध है कि पीड़ित परिवारों को पूरी सहयाता प्रदान करें तथा घायलों के उपचार में हर संभव मदद करें। **INDIA** के कार्यर्ताओं से आग्रह है कि वो राहत और बचाव कार्यों में प्रशासन का सहयोग करें।*

सम्पादकीय...

एक ही व्यक्ति नारायण भी और भोले भी

हाथरस में एक बाबा के सत्संग की भगदड़ में करीब सवा सौ लोग मरे तब देश में ज्यादातर लोगों को सूरजपाल जाटव उर्फ भोले बाबा के बारे में मालूम हुआ। लोग इन बाबा को नहीं जानते थे लेकिन अब पूरी कुंडली सब लोग जान गए हैं। सूरजपाल पहले खेती किसानी करता था, फिर उत्तर प्रदेश पुलिस में भर्ती हो हुआ। वहां से निकल कर नारायण हरि उर्फ भोले बाबा बना। सोचें, नारायण भी और भोले भी यानी विष्णु भी और शिव भी एक ही व्यक्ति बन गया! अब सबको पता है कि इस बाबा के खिलाफ कई मुकदमे थे, जिसमें एक लड़की छेड़ने का भी मुकदमा था। इस बाबा के पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान में लाखों भक्त हैं। बाबा के आठ आश्रम बताए जा रहे हैं और करोड़ों की संपत्ति बताई जा रही है। भगदड़ की वजह से बाबा की खोज हुई है। लोगों ने इस बाबा को जाना है। मगर ऐसे कितने ही बाबा देश के अलग अलग हिस्सों में और अलग अलग जातीय समूहों की भीड़ को भक्त बना कर आश्रम और मठ चला रहे हैं, जिनके बारे में लोगों को पता नहीं है। बाबा सूरजपाल मुर्दों में जान फूंक देने का दावा करता था, जिसे लेकर एक मुकदमा हुआ था। भक्तों की भीड़ बाबा के चमत्कार में विश्वास करती हैं। भक्तकहते हैं कि बाबा ने दुनिया बनाई है और वे ब्रह्मांड के स्वामी हैं लेकिन भगदड़ में हुई मौतों के लिए उसको जिम्मेदार नहीं ठहराते हैं और न उसको कहा कि वह इन मुर्दों में जान फूंक दे। बहरहाल, पिछले 25 साल में यानी 21वीं सदी की पहली चौथाई में यह कमाल की अविश्वसनीय परिघटना है लेकिन भारत में हर 50 किलोमीटर की दूरी पर कोई न कोई बाबा आश्रम बनाए हुए है और भक्त चमत्कार की उम्मीद में उसकी चरण धूलि लेने के लिए जान की बाजी लगा रहे हैं। जो बाबा आश्रम बना कर नहीं बैठा है वह इंटरनेट की दुनिया में है। वह सोशल मीडिया पर भक्तों को चमत्कारिक सुझाव दे रहे है।

सत्यं शिवम सुंदरम

शिव नित्य हैं, शिव अनंत है, शिव सर्व ब्रह्माण्डों की आत्माओं के पिता है, इसी कारण सिर्फ उनको ही परम पिता परमात्मा या शिवपरमात्मा के नाम से जाना जाता है। संपूर्ण जगत में शिव से उपर कोई शक्ति होती ही नहीं इसीलिए शिव को "सुप्रीम पॉवर ऑफ द वर्ल्ड" भी कहा जाता है। देवी देवताएँ द्वापर के बाद जन्मे हुए हैं।शिव का न कोई जन्म है,न ही उनकी मृत्यु है।वो नित्य हैं–निराकार हैं–अगाध हैं–अगोचर हैं–अनंत हैं और ज्योति रूप में परमधाम में निवास करते हैं।

आत्मा जब मानुष देह में आती है तो मनुष्य आत्मा कहलाती है। आत्मा शरीर में प्रवेश के पहले और आत्मा के शरीर छोड़ने के बाद ज्योति बिंदु के रूप में रहती है। इसी कारण आत्मा के शरीर छोड़ने के बाद से आत्मा को ज्योति रूप में मानकर ज्योति प्रज्वलित करने की धारणा बताई गई है। शरीर का आत्मा के बिना कोई महत्व नहीं होता पर आत्मा दिखाई नहीं देती। परमात्मा शिव सारी संसार की रचना, पालन, और विनाश करते हैं पर स्वयं कभी किसी को नजर नहीं आते।

सत्यं शिवम सुंदरम। शिव ही सत्य है, अनंत है, अनादि है पर अदृश्य है और जो भी संसार में इन आँखों से दिखाई दे रहा है सब मिटने वाला है। शिव शब्द का अर्थ है कल्याणकारी। सर्व का कल्याण करने वाले।

नमः शिवाय

सोशल मीडिया पर बाबाओं का विवाद

जब से सोशल मीडिया का प्रभाव तेजी से व्यापक हुआ है, तब से समाज का हर वर्ग यहां तक कि गृहणियां भी 24 घंटे सोशल मीडिया पर हर समय छाए रहते हैं। इसके दुष्परिणामों पर काफी ज्ञान उपलब्ध है। सलाह दी जाती है कि यदि आपको अपने परिवार या मित्रों से संबंध बनाए रखना है, अपना बौद्धिक विकास करना है और स्वस्थ और शांत जीवन जीना है तो आप सोशल मीडिया से दूर रहें या इसका प्रयोग सीमित मात्रा में करें। पर विडंबना देखिए कि समाज को संयत और सुखी जीवन जीने का और माया मोह से दूर रहने का दिन–रात उपदेश देने वाले संत और भागवताचार्य आजकल स्वयं ही सोशल मीडिया के जंजाल में कूद पड़े हैं। विशेषकर ब्रज में ये प्रवृत्ति तेजी से फैलती जा रही है। पिछले ही दिनों वृंदावन के विरक्त संत प्रेमानंद महाराज और प्रदीप मिश्रा के बीच सोशल मीडिया पर श्री राधा तत्व को लेकर भयंकर विवाद चला। ऐसे ही पिछले दिनों वृंदावन में नवस्थापित भागवताचार्य अनिरुद्धाचार्य के वक्तव्य भी विवादों में रहे। इसी बीच बरसाना के विरक्त संत श्री रमेश बाबा द्वारा लीला के मंचन में राधा स्वरूप धारण कर बालाकृष्ण से पैर दबवाने पर विवाद हुआ। ये सब ब्रज की विभूतियां हैं। हर एक के चाहने वाले भक्त लाखों–करोड़ों की संख्या में हैं। जैसे ही कोई विवाद पैदा होता है, इनका चेला समुदाय भी सोशल मीडिया पर खूब सक्रिय हो जाता है। ठीक वैसे ही राजनैतिक दलों की ट्रोल आर्मी, जो बात का बतंगड़ बनाने में मशहूर है, सक्रिय हो जाती है। यह सब सोशल मीडिया में अपनी पहचान बनाने का एक तरीका बन गया है। अब प्रेमानंद जी वाले विवाद को ही लीजिए, कितने ही कम मशहूर भागवताचार्य भी इस विवाद में कूद पड़े जिनके फॉलोवर्स चार–पांच सौ ही थे पर जैसे ही वे इस विवाद में कूदे तो उनकी संख्या 20 हजार पार कर गई यानी बयानबाजी भी फायदे का सौदा है। परंपरा से शास्त्र ज्ञान का आदान–प्रदान गुरुओं द्वारा निर्जन स्थलों पर किया जाता था जहां जिज्ञासु अपने प्रश्न लेकर जाता था और गुरु की सेवा कर ज्ञान प्राप्त करता था। यही पद्धति भगवान श्री कृष्ण ने कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन को बताई थी। भगवद् गीता के चौथे अध्याय का चौंतीसवां लोक इसी बात को स्पष्ट करता है। तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनरू।। 4. 34।।य परंतु सोशल मीडिया ने आकर ऐसी सारी सीमाओं को तोड़ दिया है। अब धर्मगुरु चाहें न चाहें पर उनके शिष्य, उनके प्रवचनों का सोशल मीडिया पर प्रसारण करने को बेताब रहते हैं और फिर अलग–अलग गुरु ओं के शिष्य समूहों में आपसी प्रतिद्वंद्विता चलती है कि किस गुरु के कितने चेले या श्रोता

हैं। जिस संत के फॉलोवर्स की संख्या लाखों में होती है उन पर टिप्पणी करना या उन्हें विवाद में घसीटना लाभ का सौदा माना जाता है क्योंकि वैसे तो ऐसा विवाद खड़ा करने वालों की कोई फॉलोइंग होती नहीं है। पर इस तरह उन्हें बहुत बड़ी तादाद में फॉलोवर और लोकप्रियता मिल जाती है। मतलब यह कि आप में योग्यता है कि नहीं, पात्रता है कि नहीं, आपको उस विषय का ज्ञान है कि नहीं, इसका कोई संकोच नहीं किया जाता। केवल सस्ती लोकप्रियता पाने के लालच में बड़े बड़े संतों के साथ नाहक विवाद खड़ा किया जाता है। आजकल ऐसे विवादों की भरमार हो गई है। वैसे तो तकनीकी के हमले को कोई चाह कर भी नहीं रोक सकता। पर कभी–कभी इंसान को लगता है कि उसने भयंकर भूल कर दी। 2003 की बात है जब मैंने बरसाना (मथुरा) के विरक्त संत श्री रमेश बाबा के प्रवचन नियमित रूप से हर सप्ताह बरसाना जा कर सुनना शुरू किया, बाबा की भक्ति और सरलता ने मुझे बहुत प्रभावित किया और मुझे लगा कि बाबा के प्रवचन पूरी दुनिया के कृष्ण भक्तों तक पहुंचने चाहिए। तब ऐसा होना टीवी चौनल के माध्यम से ही संभव था क्योंकि तब तक सोशल मीडिया इतना लोकप्रिय नहीं हुआ था। मैंने इसके लिए प्रयास करके श्री मान मंदिर में टीवी रिकॉर्डिंग स्टूडियो की स्थापना कर दी। उस दौर में मान मंदिर के विरक्त साधुओं ने मेरा कड़ा विरोध किया। उनका कहना था कि बाबा की बात अगर इस तरह प्रसारित की जाएगी तो बरसाना में कलियुग का प्रवेश कोई रोक नहीं पाएगा पर बाबा ने मुझे अनुमति दी तो काम शुरू हो गया। इसका लाभ मान मंदिर को यह हुआ कि उसके भक्तों की संख्या में देश–विदेश में तेजी से बढ़ोतरी हुई और वहां धन की वष्रा होने लगी। तब मुझे विरोध करने वाले अव्यावहारिक प्रतीत होते थे। पर आज जब मैं पलट कर देखता हूं तो मुझे लगता है कि वाकई इस प्रयोग ने मान मंदिर के पवित्र, शांत और निर्मल वातावरण को बहुत सारे झमेलों में फंसा दिया। वहां टीवी का प्रवेश न हुआ होता तो वहां का अनुभव पारलौकिक होता था जिसे अनुभव करने नीतीश कुमार, अर्जुन सिंह, सुषमा स्वराज, लालू यादव, केंद्रीय सतर्कता आयुक्त और सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश तक उस दौर में वहां गए और गद्गद् हो कर लौटे। हमने बात शुरू की थी सोशल मीडिया पर बाबाओं के संग्राम से और बात पहुंच गई अध्यात्म की एकांतिक अनुभूति से शुरू होकर उसके व्यावसायीकरण तक। इस आधुनिक तकनीकी ने जहां श्री राधा कृष्ण की भक्ति का और ब्रज की संस्कृति का दुनिया के कोने–कोने में प्रचार किया वहीं इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि आज वृंदावन, गोकुल, गोवर्धन, बरसाना, मथुरा आदि अपना सदियों से संचित आध्यात्मिक वैभव और नैसर्गिक सौंदर्य तेजी से समेटते जा रहे हैं। हर ओर बाजार शक्तियों ने हमला बोल दिया है। कहते हैं कि विज्ञान अगर हमारा सेवक बना रहे तो उससे बहुत लाभ होता है पर अगर वो हमारा स्वामी बन जाए तो उसके घातक परिणाम होते हैं। एक ब्रजवासी होने के नाते और संतों के प्रति श्रद्धा होने के नाते मेरा देश भर के संतों से विनम्र निवेदन है कि सोशल मीडिया के संग्राम से बचें और अपने अनुयायियों को होड़ में आगे आकर अपना बढ़ा–चढ़ा कर प्रचार करने से रोकें जिससे वे अपना ध्यान भजन साधन के अलावा तीर्थस्थलों के सौंदर्यीकरण और रखरखाव में लगा सकें ताकि तीर्थयात्रियों को ब्रज जैसे तीर्थ में जाने पर सांस्कृतिक आघात न लगे, जो आज उन्हें लगने लगा है।

जय आत्मेश्वर
आध्यात्मिक यात्रा

बुद्धि जिस क्षण, हो जाती विलय,
परमात्मा उसी क्षण, होता उदय।
अहंकार का, हो जाता संहार,
आत्मिक प्रगति का,हो अरुणोदय।

सूरज बधा, अपनी सीमा में,
उसका प्रकाश, रहता स्वतंत्र।
परमात्मा ने वैसे ही, आत्मा को,
अलग कर छोड़ा है, घूमो अनन्त।।

जो भी हो गया, सब भला हुआ,
धन्यवाद करो, परमात्मा को।
भूत और भविष्य का, सोंचो नहीं,
समर्पित वर्तमान से,मिलो उनको।।

— आत्मिक श्रीधर
स्रोत— सद्गुरु कृपा

जय आत्मेश्वर
आध्यात्मिक यात्रा

किसी ज्ञान से लाभ, तभीं होगा,
जब लाएँ, व्यवहारिक जीवन में।
पढ़ा चाहे सुना, फिर भुला दिया,
नहीं लाभ मिले, ज्ञान वाचन में।।

हम ब्यर्थ में, ढूंढते हैं उसको,
सर्वत्र है, जो कभीं खोया नहीं।
हर प्रयास अपना, होगा बेकार,
खुद को खुद में, जो डुबोया नहीं।।

अनुभूति प्रधान,एक ध्यान संस्कार,
सद्गुरु की कृपा, समर्पण परिवार।
बाँहें फैलाए, हिमालयीन ध्यानयोग,
बुलाता आओ, है समय पुकार।।

जो मिल रहे हैं, आपसे आज लोग,
कर्मों से बना है, उनसे संयोग।
आदर करिए, सम्मान के साथ,
ईश्वर देखें उनमें, कर प्रयोग।।

व्यक्ति पूजें नहीं,पूजिए शक्ति को,
सूक्ष्म रूप से, सबमें हैं परमेश्वर।
आपके अनुकूल, विचार बदल,
आपके लिए, बनेंगे वे सुखकर।।

क्रमबद्ध प्रगति ही, उत्तम है,
अचानक परिवर्तन, खतरनाक।
नियंत्रित विकास, अहंकार रहित,
उर्ध्वगामी रहता, हरएक हालात।।

बुद्धि जिस क्षण, हो जाती विलय,
परमात्मा उसी क्षण, होता उदय।
अहंकार का, हो जाता संहार,
आत्मिक प्रगति का,हो अरुणोदय।

सूरज बधा, अपनी सीमा में,
उसका प्रकाश, रहता स्वतंत्र।
परमात्मा ने वैसे ही, आत्मा को,
अलग कर छोड़ा है, घूमो अनन्त।।

जो भी हो गया, सब भला हुआ,
धन्यवाद करो, परमात्मा को।
भूत और भविष्य का, सोंचो नहीं,
समर्पित वर्तमान से,मिलो उनको।।

— आत्मिक श्रीधर
स्रोत— सद्गुरु कृपा

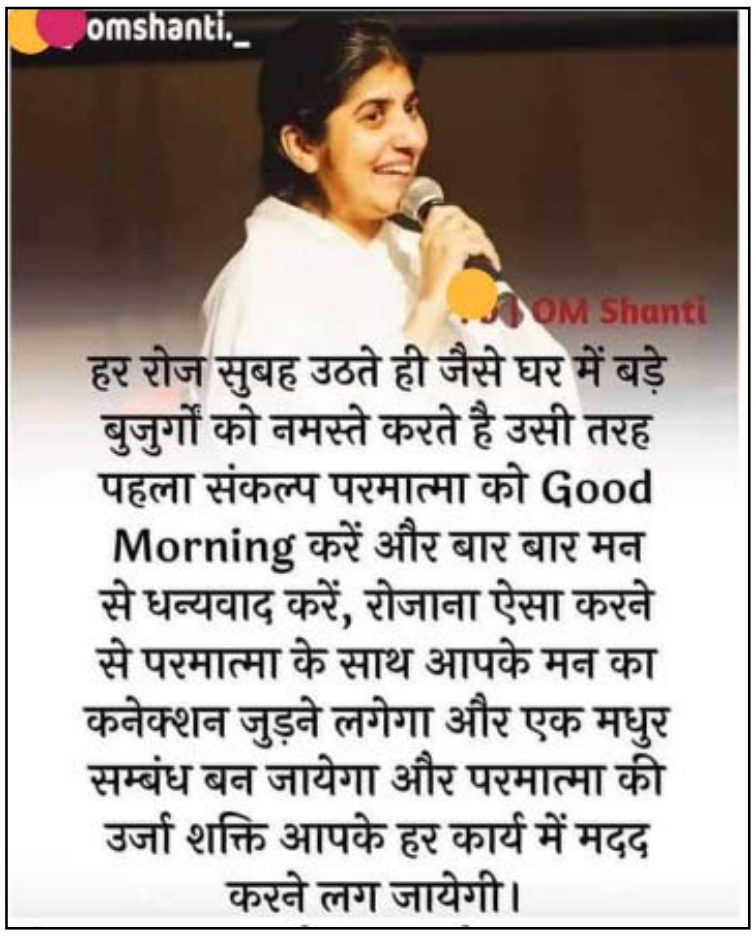

इतनी चुप्पी क्यों?...
'भोजपुरी' हित,संरक्षण एवं भोजपुरी को संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करने एवं भोजपुरी अलग राज्य बनाने की मांग पर अपनी रोटी सेकने वाले सैकड़ो संगठन, हजारों राजनीतिज्ञ एवं कई सांसद -विधायक लोग कल 'भोजपुरी नगीना'(जिन्हें 'भोजपुरी शेक्सपियर' की संज्ञा दी गई है) भिखारी ठाकुरजी के पुण्यतिथि पर कल (10 जुलाई) को कहां थे? वास्तविक आयोजन तो दूर की बात है मगर वर्चुअल आयोजन तक करके याद करना भी लोगों ने उचित नहीं समझा? यह वही शख्सियत था जो पूरा जीवन अत्यंत गरीबी, संघर्ष एवं अन्य अभाव एवं विरोध में भी भोजपुरी का झंडा साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं अन्य तरह से बुलंद रखा . फिर इतने बड़े शख्सियत के पुण्यतिथि पर याद न करना और 'चुप्पी' कहां तक उचित?
-संजय वर्मा पत्रकार (गोरखपुर)

उत्तर भारत की ओर आने—जाने वाले ट्रेन यात्रियों की समस्याऐं

मुंबई से उत्तर भारत की ओर जाने एवम आने वाले सभी ट्रेन यात्रियों की दुर्दशा के संदर्भ में विस्तृत जानकारी आपके समक्ष रख रहा हूं।

(1) मुंबई से रोजाना कई ट्रेन यु.पी. बिहार,दिल्ली, झारखंड, बंगाल की तरफ चलती हैं।हमेशा भारी भीड आने जाने वालों की रहती है।

(2) यह परिस्थिति संपुर्ण देश से उत्तर भारत की ओर जाने और आने वाले ट्रेनों की है।

(3) गरीब व मध्यम वर्ग के लोगों के लिए हर ट्रेन में 12 स्लीपर कोच लगाये जाते थे।अब स्लीपर कोच की संख्या घटाकर 5—6 कर दिया गया है। इससे गरीब यात्रियों की परेशानी बढ गई है।

(4) लोग स्लीपर कोच में लगभग 1500 रुपए दंड/पेनाल्टी प्रति व्यक्ति रेलवे वसूल कर यात्रा करने दे रहे थे।

(5) अब रेलवे ने वेटिंग लिस्ट एवम जनरल टिकट पर दंड भर कर यात्रा कर रहे लोगों को बीच रास्ते ट्रेन से उतार दिया जाता है।वेटिंग लिस्ट वाले यात्रियों का उचित प्रबंध किया जाए।

(6) जनरल कोच की संख्या नहीं बढ़ाई गई है।इसलिए उतारे गये यात्री सपरिवार परेशान होते हैं।

(7) रेलवे ने जानबूझकर केवल पैसा कमाने के उद्देश्य से स्लीपर कोच हटाकर उसे एसी स्लीपर में परिवर्तित कर दिया है।

(8)परिणाम स्वरूप लोग मालगाड़ी के डब्बों की तरह अमानवीय ढंग से यात्रा करने को विवश हैं।

(9) रेलवे टिकटों के दलाल संपुर्ण देश में सक्रिय हैं।पहले दुसरे नंबर पर रात भर जाग कर लाईन में खडे यात्रियों को कंफर्म टिकट नहीं मिलता।वेटिंग लिस्ट टिकट लेकर आना पडता है।

(10) दलालों के माध्यम से प्रति व्यक्ती 1000——2000 रुपये ज्यादा दो तो हर समय कंफर्म टिकट उपलब्ध है।

(11)यह सब दलालों,बुकिंग स्टाफ,आर पी एफ,जी आर पी एवम रेलवे के उच्च अधिकारियों की मिलीभगत/संरक्षण में चल रहा है। आपसे अनुरोध है कि गरीब/मध्यम वर्ग की जनता के तकलीफ दूर करने हेतु संसद में तथा रेल मंत्री से निम्न लिखित मांग कर न्याय दिलायें। उत्तर भारत की ओर जाने वाली ट्रेनों की संख्या बढायें। हर ट्रेन में 12—15 थ्री टायर स्लीपर कोच लगाये जाए। हर ट्रेन मे जनरल कोच की संख्या दुगुनी की जाय। दलालों रेलवे स्टाफ नेक्सस समाप्त किया जाए।

चलें यादों का पुराना बक्सा खोलते हैं...

बाश्द—अज़—वक़्त दवा का असर नहीं रहता।
साँस के टूटने पर सफर नहीं रहता।।

कबाड़ हो जाते हैं कई रिश्ते, कई असबाब,
नए फ्लैटों में पुराना फर्नीचर नहीं रहता।

थपकियाँ, सिसकियाँ, झिड़कियाँ, तल्खियाँ,
हिस्सेदार इनका कोई मगर नहीं रहता।

तफ़सील से बांट लो अपने हिस्से की यादें,
बुजुर्गों के गुजरने पर घर, घर नहीं रहता।

सलीके,शऊर, रिवाज़े बदलने लगी हैं अमित,
अब इधर इधर ही, उधर उधर नहीं रहता।

अमित कुलश्रेष्ठ

ये बस्तियां तो इन्सानों की है

इस बढ़ती हुई आबादी में वो इन्सान कहां पे खोया है,
वो आंखे तो खुली है मगर,ज़मीर लोगों का सोया है।

ये बढ़ती आबादी देखो कहीं बड़ी मुसीबत ना बन जाएं ,
और खुदके लिए ये इन्सान ही इन्सानों को निगल ना जाएं।

दिन–ब–दिन देखो कितनी आबादी सारे जहां में बढ़ रही है,
और मंहगाई की आग में कितनी जिंदगियां रोटी के लिए तड़प रही है।

जैसे–जैसे सारे जहां में ये इन्सानों की आबादी बढ़ गई,
वैसे ही बदल गई नीतियां और इन्सानियत कहीं पे दफ़न हुई।

चारों ओर बढ़ गए है कितने वीरानें इस नई बढ़ती आबादी में,
ये कारवां तो इन्सानों का है मगर, नफरतें बढ़ी है दिलों में ।

वो हर कोई जिम्मेदार है यहां पे,इस बढ़ती आबादी के लिए,
सोचो कभी ये आबादी इन्सानों के लिए ही कहीं ज़हर ना बन जाए।

इस बढ़ती हुई आबादी में,वो इन्सान कहां पे खोया है,
ये बस्तियां तो इन्सानों की है मगर,चारों ओर कितना सन्नाटा छाया है।

प्रा.गायकवाड विलास.
मिलिंद महाविद्यालय लातूर. महाराष्ट्र

कलयुग के लक्षण...

एक बार अवश्य पढ़िये और विचार करिये

1. कुटुम्ब कम हुआ
2. सम्बंध कम हुए
3. नींद कम हुई.
4. बाल कम हुए
5. प्रेम कम हुआ
6. कपड़े कम हुए
7. शर्म कम हुई
8. लाज–लज्जा कम हुई
9. मर्यादा कम हुई
10. बच्चे कम हुए
11. घर में खाना कम हुआ
12. पुस्तक वाचन कम हुआ
13. भाई–भाई प्रेम कम हुआ
15. चलना कम हुआ
16. खुराक कम हुआ
17. घी–मक्खन कम हुआ
18. तांबे – पीतल के बर्तन कम हुए
19. सुख–चौन कम हुआ
20. मेहमान कम हुए
21. सत्य कम हुआ
22. सभ्यता कम हुई
23. मन–मिलाप कम हुआ
24. समर्पण कम हुआ...

संतान को दोष न दें...

बालक या बालिका को इंग्लिश मीडियम में पढ़ाया...

अंग्रेजी बोलना सिखाया...

बर्थ डे और मैरिज एनिवर्सरी

जैसे जीवन के शुभ प्रसंगों को अंग्रेजी कल्चर के अनुसार जीने को ही श्रेष्ठ मानकर...

माता–पिता को मम्मा, मॉम,

डैड, डेडा और पॉप्स कहना सिखाया...

जब अंग्रेजी कल्चर से परिपूर्ण बालक या बालिका बड़ा होकर, आपको समय नहीं देता, आपकी भावनाओं को नहीं समझता, आप को तुच्छ मानकर जुबान लड़ाता है और आप को बच्चों में कोई संस्कार नजर नहीं आता है,

तब घर के वातावरण को गमगीन किए बिना... या...

श्संतान को दोष दिए बिना..

कहीं एकान्त में जाकर रो लें...

क्योंकि...

पुत्र या पुत्री की पहली वर्षगांठ से ही,

भारतीय संस्कारों के बजाय केक कैसे काटा जाता है ? सिखाने वाले आप ही हैं...

हवन कुण्ड में आहुति कैसे डाली जाए...

मंदिर, मंत्र, पूजा–पाठ, आदर–सत्कार के संस्कार देने के बदले...

केवल श्फर्राटेदार अंग्रेजीश बोलने को ही,

अपनी शान समझने वाले आप...

बच्चा जब पहली बार घर से बाहर निकला तो उसे

प्रणाम–आशीर्वाद के बदले

बाय–बाय कहना सिखाने वाले आप...

परीक्षा देने जाते समय

इष्टदेव/बड़ों के पैर छूने के बदले

Best of Luck

कह कर परीक्षा भवन तक छोड़ने वाले आप...

बालक या बालिका के सफल होने पर, घर में परिवार के साथ बैठ कर खुशियाँ मनाने के बदले. होटल में पार्टी मनाने की प्रथा को बढ़ावा देने वाले आप..

बालक या बालिका के विवाह के पश्चात..

कुल देवता/देव दर्शन को भेजने से पहले...

हनीमून के लिए श्फॉरेन/टूरिस्ट स्पॉट भेजने की तैयारी करने वाले आप...

ऐसी ही ढेर सारी अंग्रेजी कल्चर्स को हमने जाने–अनजाने स्वीकार कर लिया है...

अब तो बड़े–बुजुर्गों और श्रेष्ठों के पैर छूने में भी श्शर्मश आती है...

गलती किसकी..?

मात्र आपकी (माँ–बाप की)..

अंग्रेजी **International** भाषा है... इसे सीखना है...इसकी संस्कृति को जीवन में उतारना नहीं है...

मानो तो ठीक...

नहीं तो भगवान ने जिंदगी दी है...

चल रही है, चलती रहेगी...

आने वाली जनरेशन बहुत ही घातक सिद्ध होने वाली है, हमारी संस्कृति और सभ्यता विलुप्त होती जा रही है,बच्चे संस्कारहीन होते जा रहे हैं।

अंग्रेजी सभ्यता को अपना रहे सभी विचार करें।

सोच कर, विचार कर अपने और अपने बच्चे, परिवार, समाज, संस्कृति और देश को बचाने का प्रयास करें।

परिवार बचायें, समाज बचाए देश बचायें, संस्कृति बचायें

कवि हूँ मैं

माँ के आँचल से बहती,अमृत की धार हूँ मैं।
पिता की स्नेहमयी,दीप्त,फटकार हूँ मैं।
रवि की शीतलता व शशि का ताप हूँ मैं।
ऋषि,मुनि,संतो से जपने वाला जाप हूँ मैं।

मैं महर्षि व्यास का उत्तराधिकारी हूँ।
पवित्र मुस्कान लिए,शावकों की किलकारी हूँ।
मैं धरती हूँ,आकाश हूँ,मनुजता के अंतर की प्यास हूँ।
मैं अवनि पर प्रभु का आभास हूँ,मैं राम का वनवास हूँ।

मैं पर्वतों का शिखर हूँ,सागर की गहराई हूँ।
मैं तप्त,दग्ध हृदय हेतु,शीतल पुरवाई हूँ।
मैं होली का रंग हूँ,ईद की मिठास हूँ।
क्रिसमस का जोश हूँ,लोहड़ी का उल्लास हूँ।

मैं गीत हूँ,गज़ल हूँ,लोरी हूँ,युवा दिलों का ज्वार हूँ।
मैं जरावस्था की पहचान हूँ,अनुभवों का अंबार हूँ।
मैं ज्ञान का अनुगामी हूँ,समन्वय का मेल हूँ।
प्रीति का पोषक हूँ,शब्दों का खेल हूँ।

भौंरों का गुंजार हूँ,सुमनों की छवि हूँ मैं।
साहित्याकाश पर चमकता हूँ,कवि हूँ मैं,कवि हूँ मैं।।

अमित शिवकुमार दुबे
पालघर, महाराष्ट्र

ढोंग के कारण असली साधु संत बदनाम हो रहे हैं

हाथरस के जिस सभा में सैकड़ों लोगों की जान गई उस बाबा को हिंदू धर्म से नहीं जोड़ें। इसके अनुयायी हर धर्म के थे। इसके कारण असली साधु संत बदनाम हो रहे हैं।

1. यह सफ़ेद कोट पेंट, टाई पहनता था। यह जूता पहनकर प्रवचन देता था। हिंदू धर्म में ऐसा कहां होता है?

2. इस बाबा को कितने वेद पुराण का ज्ञान है? यह किस परंपरा से है? इसके गुरु कौन हैं?

3. यह अपनी सभाओं में पानी देकर लोगों पर ढोंग करता था। इसके अंदर हिंदू साधु संतों वाले कोई गुण नहीं हैं।

4. इसे तत्काल गिरफ्तार करना चाहिए। यह सब जानकारी आने के बाद इसे साधु संत और बाबा बताना भी पाप ही है।

इसके ढोंग के कारण सैकड़ों लोगों की जान चली गई।

हाथरस मामले पर जो लोग बार बार सत्संग बोल रहे हैं वे जान लें की सत्संग भगवान का होता है, और हाथरस में जो बाबा था वो भगवान को नहीं मानता, वो मानवता और सत्य का पुजारी है, इसलिए कृपया अपने मित्रो को बताइए की हाथरस में भगवान का नही इंसान का सत्संग चल रहा था, एक बार फिर हिन्दू देवी देवताओं को बदनाम करने की साजिश है

प्रचलित नामः नारायण साकार विश्व हरी
उर्फ भोले बाबा
असली नाम 'सूरज पाल'
भगवा से चिढ़ है भगवा वस्त्र नही पहनते

तन्हाई मे बैठा था एक दिन

तन्हाई मे बैठा था एक दिन अपने मकान मे,
चिड़ियाँ बना रही थी घोंसला उसी के रोशनदान मे,
पल भर में आती और पल भर में जाती थी वह,
छोटे छोटे तिनके चोंच मे भर कर लाती वह,
बना रही थी वह अपना घर एक न्यारा,
बस तिनका था ना कोई ईंट ना कोई गारा,
कुछ दिन बाद मौसम बदला हवा के झोंके आने लगे,
नन्हें नन्हें से बच्चे घोंसले मे चह चहाने लगे,
पंख निकल रहे थे दोनों के पाल रही थी चिड़ियाँ उन्हें,
पैरों पर करती खड़ा उड़ना भी सिखाती थी उन्हें ,
देखता था हर रोज उन्हें जज्बात मेरे उनसे कुछ जुड़ गए,
पंख निकालने पर दोनों बच्चे माँ को अकेला छोड़ उड़ गए,
चिड़ियाँ से पूछा मैंने,
तेरे बच्चे तुझे अकेला क्यूँ कर छोड़ गए ,
तू तो थी माँ उनकी फिर रिश्ता क्यों तोड़ गए,
चिड़ियाँ बोली सुन विनोद भैया,
परिंदे और इंसान के बच्चे मे यही तो फर्क है,
इंसान का बच्चा पैदा होते ही अपना हक जताता है,
ना मिलने पर माँ बाप को वह कोर्ट कचहरी तक ले जाता है,
मैंने बच्चों को जन्म दिया पर करता कोई मुझे याद नहीं,
मेरे बच्चे क्यों रहेंगे साथ मेरे क्योंकि मेरे पास कोई जायदाद नहीं।

विनोद ओबेरॉय

आनंद के पल

विधाः कविता

जीवन की खुशीयों का मोल समझो।
अपने परायें के सपनों को समझो।
प्यार मोहब्बत की दुनिया को समझो।
और समय की पुकार को समझो।।

मन के भावों को समझते नही।
आत्म की कभी भी सुनते नही।
दुनिया की चमक को देखते हो।
पर स्वयं को स्वयं में देखते नही।।

लक्ष्य से भटका इंसान क्या करेगा।
जिंदगी को किस ओर मोड़ेगा।
क्या जमाने में स्थापित हो पायेगा।
या जीवन भर बस भटकता रहेगा।।

जिंदगी जीने की तुम कला सीखो।
आनंद के पलों को महसूस करो।
दुख के क्षणों को भूलकर देखो।
और स्वयं को वर्तमान में देखो।।

जय जिनेंद्र

संजय जैन बीना मुंबई

तुम चाहो तो...

जीवन जल में गहरे उतरें,
और जाना हो उस पार...
तुम चाहो तो बन सकते हैं,
मैं कश्ती.. तुम पतवार...

मन उपवन को महकाना हो,
श्रद्धा सुमन चढ़ाना हो तो..
तुम चाहो तो बन सकते हैं,
मैं धागा..तुम हार...

जीवन के अंधियारों से जब,
तन मन.. जाए हार...
तुम चाहो तो कर सकते हैं,
अपना जगमग संसार..।

जीवन की अमृत बेला हो,
और करना हो भव पार....
तुम चाहो तो बन सकते हैं,
मैं राधा.. तुम प्यार....।

सविता रजनी

बोईसर, पालघर

भावना

कहानी कविता की
जब नींद आग़ोश में होती हैं,
मन की आँखें खुल जाती हैं।
शब्द बोलने लगते हैं,
कलम नृत्य दिखाती हैं

अक्षर अक्षर जुड़ जाते हैं,
शब्दों का संसार बसाने को।
गीत नया बन जाता है ,
हसीन लबों पें आने को

भाव नहीं रहते बस में,
उमड़ घुमड़ कर आते हैं ।
यही भाव तो ज़रिया बन कर
दिल की लगी बुझाते हैं

श्वेता सर्वटे

तारापुर, बोईसर

ग़ज़ल

दिल की बातें हजार मत करना
इस क़दर हमसे प्यार मत करना

वादे तोड़े हैं हजारों तुमने
आज कोई करार मत करना

कितनी ही बार गलतियां होंगी
उनका अब तुम सुधार मत करना

हम तो वैसे भी तेरे घायल हैं
और नजरों के वार मत करना

वार खंजर सी इस नज़र का है
मेरे सीने से पार मत करना

माफ़ कर दी हैं गिले की बातें
गलतियाँ अब हजार मत करना

ये कनक ज़िंदगी के शिकवे गिले
अब इन्हें बार बार मत करना

डॉ कनक लता तिवारी

हार गया बुढापा

बच्चों से कोई उम्मीद न कीजिए मम्मी पापा।
मस्त रहो मस्ती में अपने कुछ न कर पाएगा बुढापा।।
बच्चों को पढ़ा–लिखा कर काम लगाए।
शादी कर उनका परिवार बसाए।।
जो धन–दौलत सब बच्चों को दे दिए
कुछ नहीं रखे अपने लिए बचाकर।
खाली हाथ साथ न देता कोई
बच्चों से परेशान ठोकरें खाकर।।
बच्चों से कोई उम्मीद न कीजिए मम्मी पापा।
मस्त रहो मस्ती में अपने कुछ न कर पाएगा बुढापा।।
इसलिए कहते सरल बड़ी सरलता से
बच्चों को पढ़ा–लिखा पैरों पर खड़ा कीजिए।
शादी भी करवाकर उनकी जिम्मेदारी पूरी कीजिए।।
अपना कमाया अपने पास रखो
पूरा न बच्चों पर खर्च कीजिए।
कुछ तो अपने लिए रखो और कुछ उनको दीजिए।।
समय बड़ा बलवान कहकर कुछ नहीं आता है।
बच्चों पर जो बोझ बने वृद्धाश्रम ही काम आता है।।
बच्चों से कोई उम्मीद न कीजिए मम्मी पापा।
मस्त रहो मस्ती में अपने कुछ न कर पाएगा बुढापा।।
गर समय पर माया मोह के बंधन को छुटकारा देते हैं।
अपने आयु के मित्रों का साथ जो पकड़ लेते हैं ।।
अपने का जवान समझकर शौक पूरे कीजिए।
पार्कों में, बागों में,नये नये शहरों में घूमिए।।
ईश्वर सबसे अच्छा उनके भजन और गीत गाइए।
जो मन को भाए मिलकर सब वो खाना खाइए।।
बच्चों से कोई उम्मीद न कीजिए मम्मी पापा।
मस्त रहो मस्ती में अपने कुछ न कर पाएगा बुढापा।।
गाना गाओ,नाचो झूमो और खूब मस्ती कीजिए।
लेना न पड़े किसी से सभी को कुछ दीजिए।।
सदा जवान हैं हम ऐसा दिल से महसूस कीजिए।
कभी कभी बच्चा बनकर शैतानी भरी कीजिए।।
बच्चों से कोई उम्मीद न कीजिए मम्मी पापा।
मस्त रहो मस्ती में अपने कुछ न कर पाएगा बुढापा।।
साथ अगर जीवन साथी है तो एक दूजे का ध्यान दीजिए।
बचपन वाले और शादी वाले दिन याद कीजिए।।
आसपास के बच्चों के संग बच्चे बनकर
खेल कूद कीजिए।
सुबह सुबह जल्दी उठकर पार्क की सैर कीजिए।।
बुढापा तो आता ही पर न महसूस कीजिए।
दिल जवां रखना और फिर दिल पर राज कीजिए।।
जवानी फिर से आई, खुशियां जीवन में लाई।
बच्चे भी जब भूले भटके मिलने आएं
पहचान न पाएं अपने मम्मी पापा।
खुश रहकर जीना सीख लिया और हार गया बुढापा।।
बच्चों से कोई उम्मीद न कीजिए मम्मी पापा।
मस्त रहो मस्ती में अपने कुछ न कर पाएगा बुढापा।।

हरि प्रकाश गुप्ता सरल

भिलाई छत्तीसगढ़

क्या ज्यादा चीनी खाने से जा सकती है आंखों की रोशनी? विशेषज्ञों की इस सलाह पर दें ध्यान

आहार में जिन दो चीजों की अधिकता को सेहत के लिए सबसे हानिकारक माना जाता रहा है वह है चीनी और नमक। ज्यादा नमक वाली चीजों के कारण ब्लड प्रेशर और हार्ट से संबंधित समस्याओं का जोखिम रहता है, वहीं चीनी के कारण डायबिटीज सहित कई अन्य क्रोनिक बीमारियों का खतरा रहता है। पर क्या आप जानते हैं कि ज्यादा चीनी वाली चीजें खाने से आपकी आंखों पर भी नकारात्मक असर हो सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, चीनी खाने से डायबिटीज का जोखिम होता है, इस बारे में खूब चर्चा भी की जाती रही है। इससे आंखों जैसे संवेदनशील अंग भी बुरी तरह से प्रभावित हो सकते हैं, इसपर ध्यान नहीं दिया जाता है। इतना ही नहीं मीठी चीजों के अधिक सेवन के कारण आपकी आंखों की रोशनी भी जा सकती है।

अधिक मात्रा में चीनी का सेवन हो सकता है हानिकारक

स्वास्थ्य विशेषज्ञ बताते हैं, हम में से अधिकतर लोग रोजाना तय मात्रा से अधिक चीनी का सेवन कर रहे हैं। औसत अमेरिकी प्रति वर्ष 61 पाउंड (27 किलोग्राम) तक प्रोसेस्ड चीनी का सेवन कर रहा है। अधिक मात्रा में चीनी आपके समग्र स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुंचा सकती है, जिसमें आपकी आंखें भी शामिल हैं। अध्ययनों में भी चीनी को कई गंभीर नेत्र स्थितियों और बीमारियों से जोड़ा गया है। चीनी के अधिक सेवन के कारण ब्लड शुगर बढ़ने लगता है जो आंखों की तंत्रिकाओं को क्षति पहुंचाने के साथ इंफ्लामेशन के खतरे को भी बढ़ा देती है जिससे आंखों से संबंधित कई तरह की बीमारियों का जोखिम बढ़ जाता है।

ज्यादा चीनी से डायबिटिक रेटिनोपैथी का खतरा

कई अध्ययनों में वैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया है कि ज्यादा चीनी (सफेद चीनी, मीठे पेय–खाद्य पदार्थ) समय के साथ डायबिटिक रेटिनोपैथी का खतरा बढ़ा देती है। डायबिटिक रेटिनोपैथी टाइप–1 और टाइप–2 दोनों ही डायबिटीज वाले लोगों में होने वाली जटिलता है। अगर इसका इलाज न किया जाए या शुगर का स्तर अक्सर अनियंत्रित बना रहता है तो यह आंखों की रोशनी कम होना या अंधेपन का कारण बन सकती है। डायबिटिक रेटिनोपैथी में खून में शुगर का स्तर बढ़ने के कारण रेटिना में नाजुक छोटी रक्त वाहिकाओं को नुकसान पहुंचने लगता है। कुछ लोगों में इसके कारण आंख के अंदर रक्तस्राव और निशान भी पड़ जाते हैं।

ग्लूकोमा के हो सकते हैं शिकार

ज्यादा चीनी खाने वालों में आंखों से संबंधित एक अन्य बीमारी– ग्लूकोमा का खतरा भी काफी बढ़ जाता है। उच्च रक्त शर्करा और इंसुलिन के अनियंत्रित स्तर के कारण आंखों की रक्त वाहिकाएं संकरी हो सकती हैं और जिससे तरल पदार्थ का निर्माण भी होने लगता है। अगर समय रहते इस समस्या पर ध्यान न दिया जाए तो इसके परिणामस्वरूप ग्लूकोमा होने का खतरा भी बढ़ जाता है। ग्लूकोमा की स्थिति में आंखों में बनने वाला तरल पदार्थ अंदरूनी हिस्से में दबाव बढ़ाने लगाता है, जिससे ऑप्टिक तंत्रिकाओं को नुकसान पहुंचने का खतरा हो सकता है।

क्या कहते हैं डॉक्टर्स?

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, भले ही आपको डायबिटीज हो या न हो, आहार में चीनी की मात्रा को कंट्रोल में रखना जरूरी है। चीनी के अलावा मीठे पेय, कोल्ड ड्रिंक्स और स्पोर्ट्स ड्रिंक के कारण भी शुगर का स्तर बढ़ने और आंखों की समस्याओं का जोखिम रहता है। वयस्कों को प्रतिदिन 25–30 ग्राम से अधिक मात्रा में चीनी या अन्य मीठी चीजों के सेवन से बचना चाहिए। इसके साथ सालाना आंखों की जांच कराते रहना जरूरी है जिससे आंखों से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या से सुरक्षित रहा जा सके।

गोरखपुर की टेनिस खिलाड़ी शगुन की लंबी छलांग...

ऑल इंडिया टेनिस एसोसिएशन के हाल में जारी रैंकिंग में गोरखपुर की स्टार खिलाड़ी शगुन कुमारी ने अंडर–18 में देश में सातवीं रैंक हासिल की है। टॉप टेन में शगुन यूपी की एकमात्र खिलाड़ी हैं। शगुन कुछ समय पहले तक आठवें स्थान पर थीं, लेकिन विभिन्न प्रतियोगिताओं में अच्छे प्रदर्शन के कारण उनकी रैंकिंग में एक स्थान का सुधार हुआ है। हालांकि

वह अब भी अपनी ऑल इंडिया सर्वोच्च रैंकिंग से एक पायदान पीछे हैं। शगुन जल्द से जल्द टॉप थ्री में अपना स्थान बनाना चाहती हैं। सीनियर वर्ग में इंडिया का प्रतिनिधित्व करना लक्ष्य. शहर के बौलिया कॉलोनी के रहने वाली शगुन के पिता आनंद जीत लाल भी टेनिस खिलाड़ी रहे हैं और स्पोर्ट्स कोटे से ही उन्हें पूर्वोत्तर रेलवे में नौकरी मिली है। शगुन के बड़े भाई शुभम जीत लाल भी टेनिस के नेशनल खिलाड़ी हैं और अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण के बाद वह गोरखपुर क्लब में टेनिस खिलाड़ियों की नई पौध तैयार करने में जुटे हैं।

मेहनत, पढ़ाई और अब अन्य सभी चीजों में धीरे–धीरे सुधार हो रहा है। मेरा लक्ष्य सीनियर वर्ग में देश का प्रतिनिधित्व करना है। उसी के लिए मेहनत कर रही हूं। गोरखपुर के साथ ही नोएडा में प्रैक्टिस चल रही है। मेरे पिता ही मेरे कोच रहे हैं। गोरखपुर के एक क्लब में सीमित संसाधनों के साथ खेल सीखा और अपने भाई के साथ अभ्यास किया। टेनिस जगत में गोरखपुर का स्थान वर्तमान में बहुत बढ़िया नहीं था, मगर सुकून ने उसमें जान डाल दिया और वह उत्तर प्रदेश की एक बेहतरीन खिलाड़ी बन गई और राष्ट्रीय रैंकिंग में भी उछाल ली . गोरखपुरयों की तरफ से हार्दिक बधाई.. शुभकामनाएं....

–संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार
सामाजिक विज्ञान, विज्ञान एवं खेलकूद (गोरखपुर)

अनंत, राधिका की शादी को आलिया कश्यप ने बताया सर्कस, बोलीं– किसी की शादी के लिए खुद को बेचने...

नई दिल्ली। अंबानी परिवार में इस वक्त जश्न का माहौल है। मुकेश अंबानी के छोटे बेटे यानी अनंत अपनी लॉन्ग टाइम गर्लफ्रेंड राधिका मर्चेंट से 12 जुलाई को शादी के बंधन में बंधने वाले हैं। ऐसे में अंबानी हाउस में वेडिंग फंक्शन्स की शुरुआत हो चुकी

हैं। अब तक मामेरू, संगीत सेरेमनी और हल्दी सेरेमनी का आयोजन हो चुका है। वहीं अब जल्द राधिका अंनत के नाम की मेहंदी अपने हाथों में लगवाने वाली हैं। अंबानी परिवार के इस जश्न में अब तक कई नामी हस्तियां शामिल हुई है। दूसरी तरफ पूरा बॉलीवुड इस शादी में झूमता नजर आ रहा है। तो वहीं फिल्म डायरेक्टर अनुराग कश्यप की बेटी आलिया कश्यप ने इस शादी को सर्कस बताया है। डायरेक्टर अनुराग कश्यप की बेटी आलिया कश्यप अक्सर अपने पोस्ट को लेकर सुर्खियों में बनी रहती हैं। अब एक बार फिर कुछ ऐसा ही हुआ है। उन्होंने अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की शादी सर्कस बताया है। आलिया कश्यप ने ब्रॉडकास्ट चौनल गप शप विद कश्यप पर अंबानी शादी की जिक्र किया– इस समय अंबानी की शादी, शादी नहीं बल्कि एक सर्कस बन गया है। सोशल मीडिया पर उनका एक पोस्ट वायरल हो रहा है, जिसमें लिखा है, मुझे कुछ फंक्शन में बुलाया गया था क्योंकि जाहिर तौर पर वो कर रहे थे (मुझसे मत पूछिए क्यों) लेकिन मैंने मना कर दिया क्योंकि मैं यह विश्वास करना चाहती थी कि किसी की शादी के लिए खुद को बेचने की तुलना में मेरे पास थोड़ा ज्यादा आत्मसम्मान है। लोगों के पास ज्यादा पैसा है तो उन्हें समझ नहीं आ रहा है कि वह उसका क्या करें। बीते साल आलिया ने अपने विदेशी ब्वॉयफ्रेंड शेन ट्रेडिशनल से सगाई की थी। आलिया की उम्र अभी केवल 23 साल ही है। उन्होंने बेहद कम उम्र में अपने लाइफ पार्टनर को चुना है। इस उम्र में सगाई कर आलिया काफी खुश है। बीते दिनों आलिया और शेन ने अपनी शादी को लेकर भी खुलासा किया था और बताया कि वह दो शादियां करेंगे। यह कपल साल 2025 में शादी करेगा।

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

सम्पादक

पूजा प्रसाद पाण्डेय

मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।